

## ॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्म॑णे ब्राह्म॑णमाल॑भते। क्षत्रा॑य राज॒न्यम्। म॒रुद्भ्यो वैश्य॑म्।  
तप॑से शू॒द्रम्। तम॑से तस्कर॑म्। ना॒र॑काय वी॒र॒हण॑म्। पा॒प्म॒ने  
क्ली॒बम्। आ॒क्र॒याया॑यो॒गूम्। का॒मा॑य पु॒ङ्ग॒लूम्। अति॑क्रु॒ष्टाय  
मा॒ग॒धम्॥ १ ॥

गी॒ताय॑ सू॒तम्। नृ॒त्ताय॑ शैलू॒षम्। ध॒र्मा॑य स॒भाच॑रम्। न॒र्मा॑य  
रे॒भम्। नरि॑ष्टायै भी॒म॒लम्। ह॒सा॑य का॒रिम्। आ॒न॒न्दा॑य  
स्त्री॑ष॒खम्। प्र॒मु॒दे॑ कु॒मा॒रीपु॒त्रम्। मे॒धा॑यै रथका॒रम्। धै॒र्या॑य  
तक्षा॑णम्॥ २ ॥

श्र॒मा॑य कौला॒लम्। मा॒या॑यै का॒र्मा॒रम्। रू॒पा॑य म॒णि॒का॒रम्।  
शु॒भे॑ व॒पम्। श॒र॒व्या॑या इषुका॒रम्। हे॒त्यै ध॑न्वका॒रम्। क॒र्म॒णे  
ज्या॑का॒रम्। दि॒ष्टाय॑ र॒ज्जु॒स॒र्गम्। मृ॒त्य॑वे मृ॒ग॒युम्। अ॒न्त॑काय  
श्व॒नि॒तम्॥ ३ ॥

स॒न्ध॑ये जा॒रम्। गे॒हा॒योप॑प॒तिम्। नि॒र्ऋ॑त्यै परि॒वि॒त्तम्।  
आ॒र्त्यै परि॑वि॒वि॒दा॒नम्। अ॒रा॑ध्यै दि॒धिषू॑प॒तिम्। प॒वि॒त्रा॑य  
भि॒ष॒जम्। प्र॒ज्ञा॒ना॑य नक्ष॒त्र॒दर्श॑म्। निष्कृ॑त्यै पेश॒स्का॒रीम्।  
ब॒ला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रु॒धम्॥ ४ ॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय  
 दुर्मदम्। प्रयुञ्ज्य उन्मत्तम्। गुन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्।  
 सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया  
 अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः  
 कण्टककारम्॥५॥

उत्सादेभ्यः कुञ्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्यः स्नामम्।  
 स्वप्रायान्धम्। अर्धर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्।  
 प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षाया  
 अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्जविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्यै क्षत्तारम्।  
 औपन्द्रष्टाय सङ्गहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्।  
 प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः  
 पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य  
 पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णगम्।  
 देवल्लोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्।  
 सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवर्त्यै वृधायोपमन्थितारम्।  
 सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय  
 परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मैभ्यो हस्तिपम्। जवायांश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्।

तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्।  
कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्।  
अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसुरम्। शोकायाभिसुरम्।  
उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय  
विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्।  
निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

युम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकां। संवत्सराय  
पर्यारिणीम्। परिवत्सरायाविजाताम्। इदवत्सरायापस्कद्वरीम्।  
इद्वत्सरायातीत्ववरीम्। वत्सराय विजर्जराम्। सर्वन्त्सराय  
पलिक्रीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो  
बैन्दम्। नड्वालाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय  
मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनैभ्यः  
पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः  
किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भूषम्। अन्ताय बहुवादिनम्।  
अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्।  
आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्।  
ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मणम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सायै॑ पौ॒ल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॒ग॒र॒णम्। अ॒भू॒त्यै स्व॒प॒नम्।  
तु॒लायै॑ वा॒णि॒जम्। वर्णा॑य हि॒र॒ण्यका॒रम्। वि॒श्वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑  
सि॒ध्म॒लम्। प॒श्चाद्दोषा॑य ग॒ला॒वम्। ऋ॒त्यै ज॒नवा॒दि॒नम्। व्यृ॒द्ध्या  
अ॒प॒ग॒ल्भ॒म्। स॒ंश॒राय॑ प्र॒च्छि॒दम्॥१४॥

ह॒साय॑ पु॒ंश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णावा॒दङ्ग॑णकङ्गी॒ताय॑।  
याद॑से शा॒बु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भ॒द्रव॒तीम्। तू॒णव॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्यं  
पा॒णि॒सङ्घा॒त॒नृ॒त्ताय॑। मो॒दा॒या॒नु॒क्रो॒श॒कम्। आ॒न॒न्दाय॑  
त॒ल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कि॒त॒वम्। कृ॒ताय॑ स॒भा॒वि॒नम्। त्रेता॑या  
आ॒दि॒न॒व॒द॒र्श॒म्। द्वा॒प॒राय॑ ब॒हिः स॒दम्। क॒ल॒ये स॒भा॒स्था॒णुम्।  
दुष्कृ॑ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्र॒ह्मचा॑रि॒णम्। पि॒शा॒चेभ्यः॑  
सै॒लग॒म्। पि॒पा॒सायै॑ गो॒व्य॒च्छम्। नि॒र्ऋ॒त्यै गो॒घा॒तम्। क्षु॒धे  
गौ॒वि॒क॒र्त॒म्। क्षु॒तृ॒ष्णाभ्या॑न्तम्। यो गां वि॒कृ॒न्त॒न्तं मा॒ंसं  
भि॒क्ष॑मा॒ण उप॑तिष्ठते॥१६॥

भू॒म्यै पी॒ठस॒र्पि॒ण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽस॒लम्। वा॒यवे॑  
चा॒ण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षा॒य व॑श॒न॒र्ति॒नम्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्।  
सू॒र्याय॑ ह॒र्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मि॒र्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒ला॒सम्।  
अ॒ह्ने शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रा॒त्रि॒यै कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पु॒रु॒ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नव्यो॑नमु॒दान॑ संमा॒न॒न्ता॒न  
वा॒यवे॑। सू॒र्याय॑ चक्षु॒रा ल॑भते। म॒नश्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रो॒त्रम्।

प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्।  
अतिकृशमत्यसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्ण-  
मतिलोमशम्। अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमतिमेमिषम्।  
आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै  
दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्कायै बीभत्सायै दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश  
भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः  
प्रपाठकः समाप्तः॥